आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका।

आत्म - प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वर्ष : 02 | अंक : 10 | जनवरी 2013 | विक्रम संवत् 2069

आशीर्वाद
प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

सम्पादक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली

संयोजक
विनीत श्रीमाली

सह-संयोजक
अरुण मिश्रा, रामप्रताप

प्रकाशक एवं स्वामित्व
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

मुद्रक
'सुदर्शन प्रिन्टर्स'
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित

कार्यालय :
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान
1-सी पंचवटी कॉलोनी,
रातानाडा, जोधपुर
से प्रकाशित

मूल्य भारत में
एक प्रति : 24/-
वार्षिक : 310/-

सम्पादक की कलम से ....

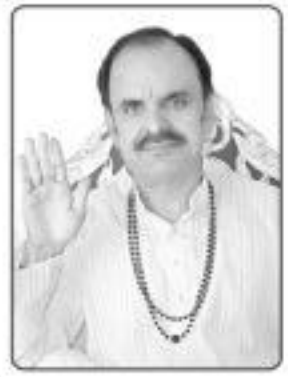

अपनो से अपनी बात

प्रिय आत्मन,

शुभाशीर्वाद !

नववर्ष के पावन मंगलमय शुभ अवसर पर पत्रिका परिवार और कार्यकर्ताओं की ओर से इस नूतनवर्ष की आप सभी को मंगल कामनाएं और जीवन में नूतनता, नवीनता, श्रेष्ठता, उज्ज्वलता और धवलता का भाव चिंतन उत्तोरत्तर चेतनामय और ओजमय बन सके ऐसी ही आपके परिवार के लिए शुभ कामनाएं अर्पित करता हूं।

गुरू का कार्य तो निरन्तर सदैव अपने शिष्यों को ज्ञान चेतना और भाव के माध्यम से सब कुछ अर्पित करने की क्रिया रहती है और सदैव सदैव गुरू की यही भावना रहती है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिना' अर्थात सांसारिक जीवन में गुरू से जुड़ा हुआ प्रत्येक शिष्य पूर्ण रूप से सुख मय और आनंद मय जीवन व्यतीत कर सके। इस क्रिया में निरन्तरता का भाव रहे इसीलिए गुरू बार बार अपने शिष्यों को अपने पास बुलाता है अथवा गुरू स्वयं ही शिष्यों के बीच पहुँच जाता है जिससे की शिष्य और गुरू में निरन्तर पूर्ण आत्मीय भाव का संचार बना रहे क्योंकि गुरू ही शिष्य का मार्गदर्शन करता है और साथ ही वह उसके परिवार का मुखिया भी होता है इस कारण से गुरू का कर्त्तव्य और क्रिया का भाव शिष्य के प्रति अधिक रहता है।

गुरू के ज्ञान के माध्यम से जो साधक निरन्तर समर्पण भाव रखता है उसी के जीवन में श्रेष्टता उज्ज्वलता और धवलता आ पाती है। जगह जगह भटकने से अथवा सैकड़ो सैकड़ों मन्दिरो पर माथा रगड़ने से जीवन में सुख और आनन्द की प्राप्ति नहीं होती।

महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद एक बार जगद्गुरू योगेश्वर श्रीकृष्ण के पास पाँचो पाण्डव आये और कहा की आप हमारे साथ गंगा स्नान करने चले, वहां स्नान करने से सर्व पाप धुल जायेंगे जो युद्ध में हिंसा होने पर पाप लगे हैं वह सब स्नान करने से उसी गंगा नदी में धुल जायेंगे और आत्मा पवित्र हो जायेगी। तब श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं जाने में असमर्थ हूं। लेकिन मेरे प्रतिनिधि के रूप में मेरी एक तुम्बी लेते जाओ उसे भी स्नान करा देना। पाँचो पाण्डव खुश हुए और गंगा स्नान के लिए प्रस्थान किया। पाण्डवों ने स्नान किया और जो तुम्बी श्रीकृष्ण ने दी थी उसे सम्मान के साथ एक सौ आठ बार स्नान कराया, वह अब पवित्र हो गई। सारे पाप धुल गए। फिर श्रीकृष्ण ने उसी तुम्बी का प्रसाद रूप सभी को एक एक टुकड़ा दिया और कहा कि इसको सभी ग्रहण कीजिए यह तुम्बी पवित्र हो गई है। जैसे ही पाण्डवों ने तुम्बी के टुकड़ों को अपने अपने मुख में रखा ही था की सभी अपना अपना मुख सिकुड़ कर थू थू करने लगे और बाहर जाकर थूक आए। तब श्रीकृष्ण ने पुछा- भाई क्या बात है ? जो आपने पवित्र प्रसाद को थूक दिया ? तब पाण्डवों ने कहा कि यह तुम्बी तो बहुत कड़वी है।

तब श्रीकृष्ण ने कहा कि भैया जब एक तुम्बी को १०८ बार स्नान कराने से वह तुम्बी पवित्र नहीं हुई, उसने अपना कड़वापन नहीं छोड़ा, उसका स्वाद नहीं बदला, जो जैसी ही थी वैसी ही रही, तब आपके पाप कैसे धुले आप ही विचार करें! भाई अगर गंगा स्नान करने से सब पाप धुल जाते हैं तो पानी में रहने वाली सभी मछलियां और मगरमच्छों को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती एवं जो अन्य जल में रहने वाले जीव हैं वे सब पाप से मुक्त हो जाते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता । शरीर को धोने से आत्मा पवित्र नहीं होती। आत्मा तो निरन्तर ज्ञान रूपी गुरू का स्मरण कर, आज्ञा पालन कर, त्याग और संयम से पवित्र होती है। जिस प्रकार दर्पण में आप को अपना चेहरा दिखता है उसी प्रकार गुरू को भी अपने शिष्यों के भूत वर्तमान और भविष्य का ज्ञान रहता है और उसी के अनुरूप शिष्य के प्रति चिंतन और क्रिया करके भूत और वर्तमान को सुधार कर भविष्य को उज्ज्वल मय बनाने का भाव और चेतना प्रदान करता है। नववर्ष पर संकल्प ले की अपने जीवन को उज्ज्वलमय बनाने के लिए निरन्तर गुरु के ज्ञान के प्रकाश को अपने क्षेत्र में फैलाने के लिए प्रयासरत रहूंगा।

आपका अपना
कैलाश चन्द्र श्रीमाली